tokgjyky ug# —f"k fo'ofo|ky;] tcyi|j
l|puk ,o tulEidl foHkkx

çHkkd %
l|puk ,o tulEidl vf/kdkjh

Øekd 152
fnukd 04-12-2017

lk;kchu jkT; dk :rck i|u% dk;e djuk gkxk

&Mkl- fcl|u

tuÑfofo e| Ñ"kd mRikndl lxBuk| gr| 5 fnuh çf'k{k.k 'k|:

tcyi|j 04 fnlEcjA जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय की व्यवसाय आयोजना तथा विकास इकाई द्वारा प्रदेश के कृषक उत्पादक संगठनों के सदस्यों हेतु 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुये कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने मुख्य अतिथि की आसंदी से कहा कि विश्वभर में मध्यप्रदेश को सोयाबीन राज्य के रूप में जाना जाता है किन्तु सोयाबीन की फसल में किसानों का रूझान कम हुआ है। इसलिये हमें एक बार फिर से सोयाबीन राज्य का रूतबा कायम करना होगा। उन्होंने आगे कहा कि कृषि को लाभ का धंधा बनाने हेतु नई और उन्नत कृषि तकनीक को जानना और अपनाना बहुत जरूरी है। इससे जहां लागत में कमी आयेगी वहीं उत्पादन में वृद्धि होगी। अध्यक्षीय उद्बोधन में संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. धीरेन्द खरे ने गुणवत्तायुक्त बीज कृषि की जान है। अच्छे बीज से देश की कृषि–ग्रोथ बढ़ती है। इस मौके पर एस.एस.ई.ए. के प्रबंधक सुरेश मोटवानी और अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी डॉ. आर.के. नेमा आदि मंचासीन थे। प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. एस.के. नहातकर ने बताया इस प्रशिक्षण में 10 चरणों में लगभग 300 कृषक उत्पादक संगठनों के सदस्य कृषि व्यवसाय से जुड़े आयामों पर प्रशिक्षण प्राप्त करेंगें। प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत कृषक कल्याण तथा कृषि विभाग विभाग, मप्र शासन, भोपाल ने वित्तीय सहायता प्रदान की गई है।

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय के व्यवसाय आयोजना एवं विकास इकाई द्वारा पूर्व में भी प्रदेश के साथ साथ महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तराखण्ड के कृषि विकास अधिकारियों एवं कृषकों हेतु विभिन्न आयामों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य कृषक उत्पादक संगठन जो कि ग्रामीण स्तर पर सीधे कृषकों से जुड़े होते हैं हेतु कृषि से संबंधित नवीनतम तकनीकियों की जानकारी प्रदान कराना, उच्च गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन के पहलुओं को समझाना जिससे कि प्रदेश के किसानों को इनके माध्यम से अच्छी गुणवत्ता का अनुसंशित किस्मों का बीज उचित मूल्य पर प्राप्त हो सके, साथ ही कृषक उत्पादन संगठनों के कार्यों का उचित प्रबंधन कर सके जिससे इसके कार्यकलापों को प्रदेश में विस्तारित किया जा सके तथा अधिक से अधिक किसानों को इन संगठनों से जोड़कर माननीय प्रधानमंत्रीजी के किसानों की आय वर्ष 2022 तक दो–गुना करने के संकल्प को प्राप्त किया जा सके। इन संगठनों द्वारा वर्तमान में किसानों की सेवा हेतु ग्रामीण आदान आपूर्ती, वित्तीय तथा तकनीकी परामर्श सेवाऐं, विपणन लिंकेजेज, अनुबंधित खेती, किसानों की जागरूकता हेतु समय समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना जैसे महत्वपूर्ण कार्य किये जाते हैं जिससे किसान प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से लाभान्वित होता है।

हमने प्रयास किया है कि कृशक संगठनों द्वारा किये जा रहे बहुआयामी कार्यों को इस प्रशिक्षण के माध्यम से और अधिक सुदृढ़ किया जा सके। इस प्रथम प्रशिक्षण कार्यक्रम में सॉलिडिरेटेड नीदरलैंड आधारित संगठन द्वारा प्रदेश के सोयाबीन उत्पादन तकनीकी के प्रचार प्रसार के साथ साथ कृषक संगठनों के गठन तथा क्रियाकलापों को विस्तारित करने का मार्ग प्रशस्त होगा। इस प्रशिक्षण हेतु लगभग 34 सदस्यों को नामांकित किया है। कार्यक्रम का संचालन दीपक पाल एवं आभार प्रदर्शन कु. लवीना भार्मा ने किया।

&000&

jklk;fud [kknks ds vU/kk/kqU/k ç;ksx ls e`nk dh 'kfDr {kh.k gqbZ& MkW- fclsu

fo'o e`nk fnol ij fdlkuks dks e`nk LokLF; dkMZ forfjr

tcyiqj 05 fnlEcjA विश्व मृदा दिवस पर जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित कृशक–वैज्ञानिक संवाद समारोह में कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने मुख्य अतिथि की आसंदी से कहा कि रासायनिक खादों के अंधाधुंध प्रयोग से खेतों की मिट्टी के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ा है। मृदा की तंदुरूरस्ती में मानव स्वास्थ्य का रहस्य छिपा है। इसलिये मृदा परीक्षण जरूर करायें ताकि धरती पुत्र किसान और हमारी सनातन धरती मां तंदुरूरस्त रहे और भरपूर उत्पादन प्राप्त हो सके। डॉ. बिसेन ने किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित करते हुये आगे कहा कि अकबर राज में राजा टोडरमल ने पूरे देश में खसरा की परम्परा डाली थी। इस दौर में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मृदा स्वास्थ्य कार्ड की परम्परा शुरू की है। यह कार्ड खेत और किसान के लिये अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। इससे मृदा में आवश्यक पोशक तत्वों की जानकारी मिल जाती है। समारोह के अध्यक्ष डॉ. अनुपम मिश्रा क्षेत्रीय निदेशक मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ भारतीय कृशि अनुसंधान परिशद भारत सरकार ने कहा कि फसलों के उत्पादन में गुणात्मक सुधार करने के लिये पोशक प्रबंधन करना होगा। कृशि विज्ञान केन्द्र जबलपुर के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. दिनकर शर्मा ने स्वागत भाशण में कहा कि यूरिया के बेजा इस्तेमाल से शनैः शनैः मिट्टी की ताकत लगातार कम हो रही है जिसे पुनर्जीवित करना हमारा नैतिक दायित्व है। मिट्टी की अस्वस्थता और यूरिया के कारण मानव कैंसर और टी.बी. जैसी बिमारियों से ग्रसित हो रहा है। मिट्टी में जिंक की भी बहुत कमी देखी जा रही है। जिससे उत्पादन प्रभावित हुआ है। अधिश्ठाता कृशि संकाय डॉ. पी.के. मिश्रा और संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. धीरेन्द खरे ने आव्हान किया कि संतुलित मात्रा में आवश्यतानुसार उर्वरक का उपयोग करें जिससे लागत कम आयेगी और खेती लाभ का धंधा बनेगी। इस मौके पर संचालक प्रक्षेत्र डॉ. शरद तिवारी, अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी डॉ. आर.के. नेमा, उपसंचालक कृशि श्री एस.के. निगम, विभागाध्यक्ष डॉ. गिरीश झा, डॉ. ए.के. नायडू, डॉ. ए.के. द्विवेदी सहित कृशि वैज्ञानिक और प्रदेश शासन के अधिकारीगण तथा सैकड़ों की संख्या में महिला–पुरूश किसान शामिल थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. डी.के. सिंह एवं आभार प्रदर्शन डॉ. नितिन सिंघई ने किया। द्वितीय चरण में कृशि वैज्ञानिकों ने डॉ. मोनी थामस, डॉ. सिद्धार्थ नायक, डॉ. बी.एस. द्विवेदी, डॉ. ए.के. उपाध्याय, डॉ. नीलू विश्वकर्मा, डॉ. रश्मि शुक्ला आदि ने कृशकों को मृदा परीक्षण तकनीक के साथ ही विभिन्न समस्याओं का वैज्ञानिक समाधान दिया।

&000&

tokgjyky usg# —f"k fo'ofo|ky;] tcyiqj
lpuk ,o tulEid foHkkx

çi=kd % Øekd 154
lpuk ,o tulEid vf/kdkjh fnukd 05-12-2017

ge lc feydj pukfr;ks ls thr gkfly djxs
dyifr Mk- fclsu dk gvk lEeku

tcyiqj 05 fnlEcjA जवाहरलाल नेहरू कृशि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग, कृशि महाविद्यालय के सेमीनार हॉल में राश्ट्रीय कृशि शिक्षा दिवस मनाया एवं कुलपति डॉ. पी.के. बिसेन का स्वागत एवं सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया डॉ. बिसेन ने बताया कि कृशि एवं कृशि शिक्षा से मेरा गहरा नाता है इसलिए कृशि के क्षेत्र में चाहे अन्नदाता कृशक हो या छात्र–छात्राऐं सभी के लिए कार्य करके जो खुशी एवं संतोश प्राप्त होता है वो मेरी पूँजी है।

मृदा विज्ञान विभाग के आचार्य एवं विभागाध्यक्ष डॉ. बी. सच्चिदानंद द्वारा कुलपति डॉ. पी.के. बिसेन को भाल, श्रीफल, गुलदस्ता एवं पगड़ी पहनाकर स्वागत् एवं सम्मान किया साथ ही कृशि महाविद्यालय की अधिश्ठाता डॉ. श्रीमति ओम गुप्ता भी कार्यक्रम में उपस्थित रही।

कार्यक्रम का संचालन मृदा वैज्ञानिक डॉ. भोखर सिंह बघेल एवं आभार प्रदर्शन प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. ए.के. द्विवेदी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. बी. एस. द्विवेदी, डॉ. ए. के. उपाध्याय, डॉ. जी. एस. टैगोर, डॉ. राकेश साहू, फूलचंद अमूले, अभिशेक भार्मा, गोपाल हलेचा, भौलू यादव, श्री आर.सी. वर्मा, श्री रामप्रका ा पटेल एवं राजकुमार काछी के साथ ही मृदा विज्ञान विभाग के छात्र–छात्राओं की उपस्थिति रही।

&000&

tokgjyky ug# —f"k fo'ofo|ky;] tcyi|j
lpuk ,o tulEidl foHkkx

çskd % Øekd 155
lpuk ,o tulEidl vf/kdkjh fnukd 06-12-2017

uhfr vk;kx d jk"Vh; Je vFk'kkL= ,o fodkl lLFkku fnYyh u tuÑfofo d Ñf"k foKku dUnk dk fn;k ^^,** xM

dyifr Mk- fcl u u dh ljkguk

16 gtkj xkok d 45 gtkj fdlku tM g fofo l

tcyi|j 06 fnlEcjA नीति आयोग के राश्ट्रीय श्रम अर्थशास्त्र एवं विकास संस्थान भारत सरकार दिल्ली ने कार्यो की गहन समीक्षा करते हुये बेहतर कार्यो के आधार पर जवाहरलाल नेहरू कृशि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले कृशि विज्ञान केन्द्रों को राश्ट्रीय स्तर पर ‘‘ए’’ ग्रेड प्रदान किया है। कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने केविके के वैज्ञानिक और कर्मचारियों की सराहना करते हुये गुणवत्ता में निखार लाने भविश्य में और भी उम्दा कार्य करने तथा राश्ट्रीयस्तर के अन्य अवार्ड लेने हेतु प्रेरित किया। ज्ञात हो कि जनेकृविवि के अन्तर्गत 25 जिलों में 19 कृशि विज्ञान केन्द्रों में वैज्ञानिकगण कृशि की उन्नत और नई तकनीक को प्रयोगशाला से गांवों और किसानों के खेतों तक पहॅुचाने की अहम जिम्मेदारी निभाते हुये 16 हजार गांवों के 5 लाख 44 हजार 8 सौ 10 किसानों से सीधे जुडें हैं, जिन्हें मोबाईल पर नियमित सामयिक कृशि सलाह दी जा रही है। किसानों के साथ ही अब कृशि छात्रों को भी खेती ये जोड़ा जायेगा इस पर अमल शुरू हो गया हे। युवाओं को खेती से जोड़ने हेतु लोकल स्तर पर सक्सेस स्टोरी भी बनाई जायेगी। इस मौके पर अधिश्ठाता कृशि संकाय डॉ. पी.के. मिश्रा और संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. धीरेन्द खरे, संयुक्त संचालक डॉ. दिनकर शर्मा, डॉ. एस. के. नहातकर, डॉ. मोनी थामस, डॉ. टी.आर. शर्मा, डॉ. श्रीमति अर्चना पाण्डे, एवं डॉ. अनय रावत सहित कृशि वैज्ञानिक और विशेशज्ञ शामिल थे। डॉ. संजय वैश्म्पायन ने आभार व्यक्त किया। स्मरण रहे कि देशभर में कार्यरत् 63 कृशि और पशुचिकित्सा विश्वविद्यालयों से निकलने वाली तकनीक को लैब से लैंड तक ले जाने हेतु नीति आयोग काम कर रहा है। आयोग ने एक टीम गठित की है, जिसने देशभर के 640 कृशि विज्ञान केन्द्रों की समीक्षा रिपोर्ट तैयार की है और केन्द्रों का लगातार निरीक्षण किया जा रहा है। नीति आयोग की समीक्षा रिपोर्ट सीधे प्रधानमंत्री कार्यालय भेजी जायेगी। प्रधानमंत्री द्वारा 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य रखा गया है।

&000&

tokgjyky usg# —f"k fo'ofo|ky;] tcyiqj
lwpuk ,oa tulEidZ foHkkx

çs"kd % Øekad 156
lwpuk ,oa tulEidZ vf/kdkjh fnukad 7-12-2017

fdlkuksa us tkus [kk| çlaLdj.k ds xqj

tcyiqj 7 fnlEcjA जवाहरलाल नेहरू कृशि विश्वविद्यालय स्थित कृशि अभियांत्रिकी महाविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित कटाई उपरानत अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी परियोजना जबलपुर एवं आत्मा (ATMA) परियोजना सिवनी के सौजन्य से 3 दिवसीय कृशक कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कृशकों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। कृशकों को फसल कटाई उपरान्त फसल प्रसंस्करण एवं खाद्य प्रसंस्करण विशय पर व्यवहारिक प्रशिक्षण के अन्तर्गत बीज प्रसंस्करण, सोयाबीन के मूल्य संवर्धित उत्पादों की विधि, चने एवं मूंगफली का मूल्य संवर्धन, दलिया बनाने की आधुनिक तकनीक, कोदो एवं कुटकी का कटाई उपरान्त प्रसंस्करण विधि, आलू चिप्स बनाने की आधुनिक तकनीक एवं कृशि अपशिश्ट के ऊर्जा रूपान्तरण का तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया। कृशि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के अधिश्ठाता डॉ. आर.के. नेमा ने प्रसंस्करण की महत्ता को रेखांकित किया। विभागाध्यक्ष डॉ. मोहन सिंह ने किसानों की आय दोगुनी करने में प्रसंस्करण का महत्व प्रतिपादित किया। इस दौरान में कृशि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के डॉ. व्ही.के. तिवारी, प्रो. सी.एम. एब्राल, प्रो. शीला पाण्डे, प्रो. बी.एम. खंडेलवाल, डॉ. अजय कुमार गुप्ता, डॉ. प्रीति जैन उपस्थित रहे। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. अजय कुमार गुप्ता एवं आत्मा परियोजना के इंजी. डेविस वाकड़े ने आभार व्यक्त किया।

Ñf"k Lukrdksa ds fy;s [kk| çlaLdj.k ds {ks= esa Lojkstxkj ds Lof.kZe volj& MkW- fclsu

Øekad 157
7-12-2017

tcyiqj 7 fnlEcjA कृशि छात्रों के लिये खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में स्वरोजगार का स्वर्णिम अवसर है। उक्त उद्गार जवाहरलाल नेहरू कृशि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने खाद्य प्रसंस्करण पर आधारित उद्यामिता विकास प्रशिक्षण के उदघाटन में व्यक्त किये। जनेकृविवि में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा आयोजित तकनीक आधारित उद्यमिता विकास प्रशिक्षण 6 सप्ताह तक चलेगा। सहायक छात्र कल्याण अधिकारी डॉ. अनय रावत ने प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों में उन सभी गुणों एवं क्षमताओं का विकास करना है जिससे कि वे खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में अपना स्वयं का स्वरोजगार स्थापित कर उसे सफलतापूर्वक संचालित कर सकें तथा साथ ही अन्य वर्गों के लिये भी रोजगार के अवसर उपलब्ध करा सकें। इस दौरान अधिश्ठाता कृशि संकाय डॉ. पी.के. मिश्रा, अधिश्ठाता छात्र कल्याण डॉ. व्ही.के. प्यासी, सहायक छात्र कल्याण अधिकारी डॉ. अनय रावत एवं एम.पी. कॉन लिमिटेड भोपाल के कार्यक्रम समन्वयक शीलेश मालवीय, विशय विशेशज्ञ श्री सुरेन्द्र सिंह राजपूत एवं संजय चौबे आदि उपस्थित थे। शैलेन्द रजक, यशवन्त सिंह राजपूत एवं रामचरण का सराहनीय योगदान रहा।

&000&

tokgjyky ug# —f"k fo'ofo|ky;] tcyi|j
lpuk ,o tulEidl foHkkx

çskd % Øekd 160

lpuk ,o tulEidl vf/kdkjh fnukd 12-12-2017

tuÑfofo e| ekle d| ifjorlu vUrxlr ik/k jkxk| d| çc/ku ,o| pukfr;k| rFkk volj fo"k; ij jk"Vh; lxk"Bh 14 dk|

jk"Vh; lxk"Bh e| oKkfud ik/k lj{k.k d| uohu fodYik| ij djx| eFku

nk fnolh; jk"Vh; lxk"Bh e| n'kHkj d| ik/k jkx oKkfud Hkkx yx|

tcyi|j 12 fnlEcjA जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय तथा इंडियन फाइटो पैथोलानिकल सोसायटी नई दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से 14 एवं 15 दिसम्बर 20170 को कृषि महाविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी वर्तमान में सबसे महत्वपूर्ण विशय ‘‘मौसम के परिवर्तन अन्तर्गत पौध रोगों के प्रबंधन एवं चुनौतियों तथा अवसरों’’ विशय पर आयोजित की रही है।

कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन की प्ररेणाएवं मार्गदर्शन में दो दिनों तक विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय स्तर के पौध रोग विशेशज्ञ मंथन करेंगे एवं कृषि में हो रहे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव व रोगों से बचाव के उपायों एवं समस्याओं के निदान हेतु आले वाली चुनौतियों को सूचीबद्ध करे टिकाऊ व उत्तम खेती हेतु परिकल्पना को साकार करेंगे। राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक एवं आयोजन सचिव अधिश्ठाता कृषि महाविद्यालय डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता ने बताया कि इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु 12 विभिन्न समितियों बनाई गई हैं ताकि सभी कार्यो को सुचारू रूप से सम्पन्न किया जा सके। इस संगोष्ठी में आठ थीम पर आठ तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जायेगा इस दौरान राष्ट्रीय व प्रदेशस्तर की वर्तमान में पौध रोग एवं संरक्षण के हर पहलू पर विस्तार से चर्चा एवं सिफारिश साथ ही आगामी समस्याओं को समाधान निकालने की बात होगी।

इस संगोष्ठी को सफल बनाने हेतु अधिश्ठाता कृषि संकाय डॉ. पी.के. मिश्रा, संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. धीरेन्द खरे एवं राष्ट्रीय सलाहकार समिति डॉ. एस.एस. खरे, डॉ. एस.डी. शर्मा, डॉ. बी.एम. चक्रवर्ती, डॉ. आर.एन. पाण्डे, डॉ. दिनेश सिंह, डॉ. एस.एन. सिंह व डॉ. प्रमोद गुप्ता आदि वैज्ञानिक व कर्मचारी की सक्रिय भागीदारी है।

विभिन्न तकनीकी सत्रों में राष्ट्रीयस्तर के ख्यातिलब्ध पौध रोग वैज्ञानिक भाग लेंगे। जिसमें प्रमुख रूप से डॉ. ममता शर्मा, इक्रीसेट हैदराबाद, डॉ. प्रतिमा शर्मा, आई. सी.ए.आर. नई दिल्ली, डॉ. एस.डी. दुबे, विभागाध्यक्ष, डिवीजन आफ प्लांट क्बारेन्टाइन, आई.सी.ए.आर. नई दिल्ली, डॉ. एम.पी. ठाकुर, संचालक विस्तार सेवाएं, इगांकृविवि रायपुर, डॉ. ओ.के. सिन्हा, भूतपूर्व प्रोजेक्ट क्वाडिनेटर (गन्ना) लखनऊ, डॉ. पी.पी. शास्त्री, अधिश्ठाता कृषि महाविद्यालय, सीहोर, डॉ. एस.एल. माने, विभागाध्यक्ष, डॉ. पंबाजराव देशमुख कृषि विद्यापीठ अकोला (महाराश्ट) आदि पौध रोग के राष्ट्रीयस्तर के वैज्ञानिक भाग लेंगे। इसमें प्रो. एम.जे. नरसिम्हन मेरिट एकेडमिक अवार्ड तथा एम.के. पटेल मेमोरियल यंग साइंटिस्ट अवार्ड दिये जायेंगे।

&000&

tokgjyky usg: —f"k fo'ofo|ky;] tcyiqj
lapkj ,oa tulEidZ foHkkx

çs"kd % Øekad 161
lapkj ,oa tulEidZ vf/kdkjh fnukad 12-12-2017

Ñf"k {ks= esa mTtoy Hkfo"; & MkW- fclsu
tusÑfofo esa Nk=ksa us tkuh Ñf"k rduhd

tcyiqj 12 fnlEcjA जवाहरलाल नेहरू कृशि विश्वविद्यालय में आज अपरान्ह एजूकेशलन टूर के तहत नालन्दा पब्लिक हाई स्कूल धनवन्तरि नगर के सैकड़ों छात्र–छात्राओं ने विवि में आधुनिक प्रयोगशालायें, उन्नत प्रक्षेत्र तथा कृशि संबंधी विविध रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारियां हांसिल कीं। छात्रों को संबाधित करते हुये कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने कहा कृशि का सुनहरा भविश्य है इस क्षेत्र में रोजगार के अनंत अवसर हैं। इसलिये कृशि के क्षेत्र में युवाओं की बहुत जरूरत है। भाग्य और कर्म का संगम आपको ऊचाईयां और बड़ी सफलतायें दिला सकता है। इस दौरान अधिश्ठाता कृशि संकाय डॉ. पी.के. मिश्रा, संचालक अनुसंधान सेवाएं डॉ. धीरेन्द खरे, अधिश्ठाता छात्र कल्याण डॉ. व्ही.के. प्यासी, सहायक छात्र कल्याण डॉ. अनय रावत, डॉ. प्रमोद गुप्ता, श्रीमति अनीता तिवारी, अमृता सिंह, अभिशेक तिवारी, कौशिकी श्रृंगी, हर्शित हदनगुरिया आदि उपस्थित थे।

&000&

tokgjyky ug# —f"k fo'ofo|ky;] tcyi|j
l puk ,o tulEid foHkkx

çkd %
l puk ,o tulEid vf/kdkjh

Øekd 162
fnukd 13-12-2017

Mh,u, rduhd l s Qlyk e peRdkjh ifjorlu

& Mk- fclsu

tuÑfofo e Ñf"k e vk.kfod rduhd ç;kx ij çf'k{k.k l iu

tcyi|j 13 fnlEcjA फसलों में डीएनए तकनीक के प्रयोग से चमत्कारी परिवर्तन देखने को मिलेंगे। हर फसल का डीएनए सिक्वेंस (जिनोम) अलग–अलग होता है। इनमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करके फसलों की नई और उन्नत तथा गुणवत्ता पूर्ण, रोगनिरोधी, कम पानी में ऊगने वाली और विपुल उत्पादन देने वाली फसल प्रजातियां तैयार करके क्रांतिकारी परिवर्तन लाये जा सकते हैं। तदाशय के सारगर्भित और प्रेरणास्पद उद्‌गार कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय स्थित जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र में ''कृषि में आणविक तकनीकियों के प्रयोग'' पर आयोजित प्रशिक्षण समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से व्यक्त किये और 26 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. पी.के. मिश्रा ने कहा कि प्रशिक्षितजनों के कंधे पर तकनीक के प्रचार–प्रसार की अहम् जिम्मेदारी है। जिसे खेत और किसानों तक पहुॅचाना जरूरी है। इस दौरान संचालक अनुसंधान सेवाएं एवं शिक्षण डॉ. धीरेन्द्र खरे एवं कृषि महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता विशिष्ठ अतिथि के रूप में मंचासीन रहे। पूर्व में दीप प्रज्वलन व सरस्वती वंदनोपरान्त जैव प्रौद्यौगिकी केन्द्र के संचालक डॉ. एल.पी.एस. राजपूत ने स्वागत भाशण एवं अतिथि सत्कार किया। कार्यक्रम संयोजक संचालक प्रक्षेत्र डॉ. शरद तिवारी ने प्रशिक्षण की उपादेयता प्रतिपादित की। डॉ. इति गोंटिया मिश्रा, डॉ. रीना देशमुख ने कार्यक्रम का संचालन तथा आभार प्रदर्शन डॉ. सुश्री सुषमा नेमा ने किया। कार्यक्रम में विभाग के सहप्राध्यापक डॉ. श्रीमति कीर्ति तन्तवाय, डॉ. स्वप्निल सप्रे एवं विभाग के अन्य अधिकारी और विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

&000&

tokgjyky usg# —f"k fo'ofo|ky;] tcyiqj
lpuk ,o tulEid foHkkx

çsd % Øekd 163
lpuk ,o tulEid vf/kdkjh fnukd 13-12-2017

tuÑfofo e u'kuy flEikft;e vkt

n’kHkj d ik/k jkx oKkfud tVx
ik/k jkx çcU/ku pukfr;k ij gkxk eFku

tcyiqj 13 fnlEcjA जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में इंडियन फाइटो पैथोलॉजिकल सोसायटी दिल्ली के सहयोग से आज (14 दिसम्बर) प्रातः 11 बजे कृषि महाविद्यालय स्थित विवेकानन्द सभागार में ‘‘मौसम के परिवर्तन में पौध रोग प्रबन्धन चुनौतियां और अवसर’’ विशय पर दो दिनी नेशनल सिम्पोजियम कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन की अध्यक्षता एवं प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम.एन. खरे (पूर्व अधिश्ठाता) के मुख्य आतिथ्य में आयोजित है। इसमें देशभर के राष्ट्रीय स्तर के पौध रोग विशेशज्ञ कृषि में हो रहे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव व रोगों से बचाव के उपायों एवं समस्याओं के निदान हेतु आले वाली चुनौतियों को सूचीबद्ध करके टिकाऊ व उत्तम खेती हेतु परिकल्पना को साकार करने सघन मंथन करेंगे। संगोष्ठी में आठ थीम पर आठ तकनीकी सत्रों में कृषि वैज्ञानिकों के मध्य गहन मंत्रणा होगी।

&000&

tokgjyky ug# —f"k fo'ofo|ky;] tcyi|j
l|puk ,o| tulEid| foHkkx

ç'kkd % Øekad 164
l|puk ,o| tulEid| vf/kdkjh fnukad 14-12-2017

c<+r| rkieku l| mi t| Qly|h; jk|x cM+h p|ukSfr
tuÑfofo e| u|'kuy fl|Eik|ft;e e| t|V| 200 ik|/k jk|x o|Kkfud
tcyi|j d| Ñf"k o|Kkfud Mk|- ,e-,u- [kj| dk| ykbQ Vkbe vohpe|V vokM|

tcyi|j 14 fnlEcjA ''बदलते मौसम और जलवायु तथा तापमान में निरन्तर वृद्धि ने फसलों पर विपरीत असर डाला है, जिससे उत्पादन प्रभावित हुआ है और नई कीट ब्याधियों ने जन्म लिया है। इससे निजात दिलाना कृशि वैज्ञानिक के समक्ष एक बड़ी चुनौती है।'' तदाशय के प्रेरक उद्‌गार प्रख्यात कृशि वैज्ञानिक डॉ. एम.एन. खरे (पूर्व अधिश्ठाता) ने आज अपरान्ह जवाहरलाल नेहरू कृशि विश्वविद्यालय में इंडियन फाइटो पैथोलॉजिकल सोसायटी दिल्ली के सहयोग से ''मौसम के परिवर्तन में पौध रोग प्रबन्धन चुनौतियां और अवसर'' विशय पर आयोजित दो दिनी नेशनल सिम्पोजियम में मुख्य अतिथि की आसंदी से व्यक्त किये। डॉ. खरे ने आगे कहा परिवर्तन प्रकृति का नियम है, इसलिये मौसम में तापमान वृद्धि से हमें डरना नहीं चाहिए, बल्कि मौसमानुकूल नवीन उन्नत फसल प्रजातियां तैयार करना चाहिए। सन् 1940 में पहली बार पता चला कि 0.75 डि.से. तापमान बढ़ रहा है जिसके बढ़ने की रफ्तार 21वीं सदी में 5 डि.से. हो गई है। हमें इसके अनुरूप ढ़लकर सतत् नवीन अनुसंधान करने होंगे। अपने अध्यक्षीय उदबोधन में कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने कहा कि बदलते जलवायु परिवेश में पादप रोगों की चुनौतियां तथा उनके समाधान की दिशा में विश्वस्तरीय मंथन आज की बड़ी जरूरत है, क्योंकि कालान्तर में कई गंभीरतम बिमारियों के कारण भुखमरी और अकाल की नौबत आ चुकी है। आज गेहूँ की फसल में युगांड़ा 99 के नामक कीट ब्याधि गंभीर चुनौती है। वैज्ञानिकों को पौधों की बीमारियों के प्रभावशाली नियंत्रण हेतु उनकी पहचान कर सटीक नियंत्रण करना होगा। यह भी देखना होगा कि नियंत्रण के दौरान वातावरण, मृदा तथा जलीय पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव न पड़े। मुझे खुशी है कि जनेकृविवि के वैज्ञानिकों ने कई फसलों की उन्नत किस्में विकसित की हैं जिनमें बीमारियों से लड़ने की क्षमता हैं। रोग रोधक प्रजातियां का उन्नयन एक सतत् प्रक्रिया है जिसमें हमारे वैज्ञानिक कार्यरत् हैं। संचालक अनुसंधान सेवाएं एवं शिक्षण डॉ. धीरेन्द्र खरे ने कहा कि कार्बन डाई आक्साइड के उत्सर्जन से ओजोन लेयर प्रभावित हो रही है, जिससे मौसम और जलवायु के साथ फसलों पर विपरीत असर पड़ा रहा है। लगातर बढ़ते तापमान ने विश्वभर मे चिन्ता बढ़ा दी है। इंडियन फाइटो पैथोलॉजिकल सोसायटी दिल्ली के संयुक्त सचिव डॉ. रॉबिन गोगोई ने बताया कि भारतीय पादप रोगविज्ञान संस्था, पादप रोगविज्ञान को बढ़ावा देने के लिए एक वैज्ञानिक संगठन है। यह विश्व में पादप रोग वि ोशज्ञों की तीसरी सबसे बड़ी सोसायटी है। प्रख्यात पादप रोग वि ोशज्ञ डॉ. बी.बी. मुंदकुर ने भारतीय कृशि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में आजादी के पूर्व 28 फरवरी 1947 में इस सोसायटी की स्थापना की थी। यह सोसायटी पादप रोगों और उनके नियंत्रण के अध्ययन के लिए समर्पित, एक अंतरराश्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन है। जिसका उद्‌देश्य भारत में कवक एवं पादप रोगविज्ञान का विकास, अध्ययन तथा अनुसंधान को प्रोत्साहित करना और रोगविज्ञान संबंधी ज्ञान का प्रसार करना है। डॉ. गोगोई ने आगे बताया कि भारत में पादप रोग विज्ञान का इतिहास भारतीय कृशि में लगभग 4000 वर्श पुराना है। पादप रोगों, अन्य पौधों के भात्रु एवं नियंत्रण के विशय में प्राचीन पुस्तकों जैसे ऋग्वेद, अथर्ववेद, अर्थ ाास्त्र, विश्णु पुराण आदि में वर्णन मिलता है। इस दौरान अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. पी.के. मिश्रा, कुलसचिव श्री अशोक कुमार इंगले, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय डॉ. (श्रीमति) ओम गुप्ता, इंदिरा गांधी कृ.वि.वि.

रायपुर छग के संचालक विस्तार सेवाएं डॉ. एम.पी. ठाकुर आदि मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन संचालक जैव प्रौद्योगिकी डॉ. एल.पी.एस. राजपूत एवं आभार प्रदर्शन विभागाध्यक्ष डॉ. एस. एन. सिंह ने किया।

vokMZ& जबलपुर निवासी प्रख्यात कृशि वैज्ञानिक डॉ. एम.एन. खरे (पूर्व अधिश्ठाता) को लाईफ टाईम अवीचमेंट अवार्ड से नवाजा गया। कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने उन्हें शाल, श्रीफल और प्रतीकचिन्ह भेंट किये। दो अन्य यंग सांइटिस्ट एवं मेरिट एकेडमिक अवार्ड हेतु प्रतिभागियों ने आज अपने प्रेजेंटेशन दिये जिसका निर्णय दिल्ली में होगा।

द्वितीय चरण में विभिन्न तकनीकी सत्रों में राष्ट्रीयस्तर के ख्यातिलब्ध पौध रोग वैज्ञानिक– सर्वश्री डॉ. ममता शर्मा, इक्रीसेट हैदराबाद, डॉ. प्रतिमा शर्मा, आई.सी.ए.आर. नई दिल्ली, डॉ. एस. डी. दुबे, विभागाध्यक्ष, डिवीजन आफ प्लांट क्वारेन्टाइन, आई.सी.ए.आर. नई दिल्ली, डॉ. एम.पी. ठाकुर, संचालक विस्तार सेवाएं, इगांकृविवि रायपुर, डॉ. ओ.के. सिन्हा, भूतपूर्व प्रोजेक्ट क्वाडिनेटर (गन्ना) लखनऊ, डॉ. पी.पी. शास्त्री, अधिश्ठाता कृशि महाविद्यालय, सीहोर, डॉ. एस.एल. माने, विभागाध्यक्ष, डॉ. पंबाजराव देशमुख कृशि विद्यापीठ अकोला (महाराश्ट्र), पौध रोग वैज्ञानिक डॉ. प्रमोद गुप्ता एवं डॉ. राजकुमार (दिल्ली) आदि ने हिस्सा लिया। सिम्पोजियम में देश के विभिन्न हिस्सों के लगभग 200 से अधिक पौध रोग के राष्ट्रीयस्तर के वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। आज 15 दिसम्बर को नेशनल सिम्पोजियम का समापन होगा।

&000&

tokgjyky usg# —f"k fo'ofo|ky;] tcyiqj
lapuk ,oa tulEidZ foHkkx

çskd % Øekad 165
lapuk ,oa tulEidZ vf/kdkjh fnukad 15-12-2017

Ñf"k mRiknksa dk çlaLdj.k ls Ñf"k m|ferk etcwr gksxh
&MkW- fclsu

tuÑfofo esa xzhu fctusl pSysat 2017 dk vk;kstu

tcyiqj 15 fnlEcjA जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में विश्वस्तरीय भारतीय ग्रामीण विकास संस्थान आनंद गुजरात, एकगॉव संगठन, नई दिल्ली एवं ईको नई दिल्ली के सहयोग से कृषि में उद्यमिता विकास के क्षेत्र में पूरे भारत में चलाये जा रहे जागरूकता अभियान के तहत् आज अपरान्ह जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित ‘‘ग्रीन बिजनेस चैलेंज 2017’’ में छात्रों को संबोधित करते हुये कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने मुख्य अतिथि की आसंदी से कहा कि कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण से कृषि उद्यमिता मजबूत होगी। देश में आज भी कृषि आजीविका का मुख्य साधन है वर्तमान में लगभग 57 प्रतिशत कार्यरत श्रमिक कृषि पर निर्भर है तथा 70 प्रतिशत आबादी की आजीविका का माध्यम कृशि है साथ ही 100 प्रतिशत जनसंख्या का खाद्यान सुरक्षा का माध्यम है हमने पिछले दशकों में कृषि उत्पादन 5–8 गुना बढ़ाया है। लेकिन अभी कृषि में उद्यमिता विकास न के बराबर है। खाद्यान प्रसंस्करण की प्रति वर्ष वृद्धि दर सिर्फ 8 प्रतिशत है यह सब्जी तथा फलों में 2 प्रतिशत है, तथा उपभोक्ता वस्तु में 10 प्रतिशत है वर्तमान में कृषि उद्यम में सिर्फ 50 मिलियन जनसंख्या को रोजगार उपलब्ध हैं। भारतीय खाद्यान एवं खुदरा व्यापार पूरे विश्व में छठवें क्रमांक पर हैं एवं कुल व्यापार का 70 प्रतिशत हिस्सा रखता है। अतः अब आवश्यकता है कि कृषि उद्यमिता के माध्यम से कृषि के उत्पादों का 60 से 70 प्रतिशत प्रसंस्करण हो जिससे अधिक से अधिक बेरोजगार युवा को रोजगार प्राप्त हो सके। समारोह के अध्यक्ष संचालक अनुसंधान सेवाएं एवं शिक्षण डॉ. धीरेन्द्र खरे ने कहा कि प्रसंस्करण की गति बढ़ाने से किसानों को भी उनके उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त हो सकेगा। इस मौके पर विशेशज्ञ मृगांयक मंडल ने अपने व्याख्यान में कृशि उद्यमिता जागरूकता फिल्म का भी प्रदर्शन किया। बीपीडी यूनिट के प्रभारी डॉ. सुनील नाहातकर ने स्वागत भाशण में बताया कि जनेकृविवि द्वारा कृशि उद्यमिता हेतु देशभर के किसानों, व्यापारियों, छात्रों और कृशि अधिकारियों को नियमित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस मौके अधिश्ठाता कृशि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के अधिश्ठाता डॉ. आर.के. नेमा, डॉ. जे.पी. लखानी, डॉ. एम.के. दुबे मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन ज्योति नाथ दिल्ली एवं आभार प्रदर्शन सुरेन्द्र गुप्ता ने किया। कु. लवीना शर्मा, दीपक पाल एवं जय वर्मा आदि की सक्रिय भागीदारी रही। कार्यक्रम में बड़ी संख्या छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

&000&

tokgjyky usg# —f"k fo'ofo|ky;] tcyiqj
lapuk ,oa tulEidZ foHkkx

çekad % Øekad 166
lapuk ,oa tulEidZ vf/kdkjh fnukad 15-12-2017

Ñf"k vfHk;kaf=dh egkfo|ky; dh Nk=k
tkxzfr frokjh vkLVªsfy;kbZ esa djsaxh ih-,p-Mh-

tcyiqj 15 fnlEcjA जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय स्थित कृशि अभियांत्रिकी महाविद्यालय की छात्रा कु. का ग्रिफिथ विश्वविद्यालय, ब्रिसबेन, आस्ट्रेलिया में पी.एच.डी. हेतु चयन हुआ है। यह विश्वविद्यालय विश्व के सर्वोच्च तीन प्रतिशत विश्वविद्यालयों में अपना श्रेश्ठ स्थान रखता है। कृशि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के अन्तर्गत रिमोर्ट सेसिंग एवं जी.आई.एस. प्रयोगशाला के डॉ. एस.के. शर्मा के मार्गदर्शन में किये गए शोध कार्य के आधार पर यह चयन संभव हुआ है। जनेकृविवि के कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन एवं कृशि अभियांत्रिकी महाविद्यालय के अधिश्ठाता डॉ. आर.के. नेमा ने इस गौरवशाली उपलब्धि के लिये छात्रा को आशीर्वाद एवं शुभकामनायें दी हैं।

&000&